IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन : एक विश्लेषण

डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय[1] एवं बिन्दू रानी[2]

सार

भारतीय ज्ञान परंपरा का तात्पर्य भारत की प्राचीन बौद्धिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक विरासत से है, जिसमें धर्म, दर्शन, आयुर्वेद, गणित, खगोल, योग, भाषा विज्ञान तथा लोक ज्ञान जैसी विविध ज्ञान परम्पराएं सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में शिक्षा को भारतीय मूल्यों, परंपराओं और ज्ञान संपदा से पुनः जोड़ने पर विशेष बल दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा, उसके प्रमुख आयामों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में उसके समावेशन का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है जिसमें द्वितीयक स्रोतों – नीति दस्तावेजों, शोध पत्रों और पुस्तकों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 पाठचर्या, शिक्षण-पद्धति, भाषा नीति तथा अनुसंधान के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती है तथापि, इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधन विकास तथा संस्थागत सहयोग अत्यंत आवश्यक है। निष्कर्षतः भारतीय ज्ञान परंपरा का सुनियोजित समावेशन भारतीय शिक्षा को अधिक समग्र, मूल्यपरक और वैश्विक प्रतिस्पर्धी बना सकता है।

बीज शब्द : भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, समग्र शिक्षा, भारतीय मूल्य, शैक्षिक सुधार।

प्रस्तावना- भारत की शिक्षा परंपरा विश्व की सर्वाधिक प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक मानी जाती है। तक्षशिला और नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय ज्ञान-विनिमय के वैश्विक केंद्र रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रही बल्कि यह जीवन, दर्शन, नैतिकता, आध्यात्मिकता और व्यावहारिक विज्ञान का समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करती है। महाजन (2025)के अनुसार, भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत में हजारों वर्षों में विकसित ज्ञान, विश्वासों और प्रथाओं का एक समृद्ध और विविध संग्रह है। इसकी जड़ें सिन्धु घाटी सभ्यता (लगभग 3300 -1300 ई. पू.) और वैदिक काल (लगभग 1500 ई.पू. -500 ई.पू.) तक जाती हैं। वेद जो विश्व के सबसे प्राचीन पवित्र ग्रंथों में से हैं ,भारतीय दार्शनिक और आध्यात्मिक चिंतन की नींव हैं। चारों वेद -ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, और अथर्ववेद - में भजन ,अनुष्ठान और दार्शनिक चर्चाएँ शामिल हैं। स्वरूप (2018) भारतीय ज्ञान परंपरा के चार प्रमुख घटकों की पहचान करते है :वैदिक ज्ञान प्रणाली, बौद्ध शैक्षिक दर्शन, मध्यकालीन विद्वानों की परम्पराएँ और क्षेत्रीय ज्ञान प्रथाएँ। औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय शिक्षा प्रणाली पर पाश्चात्य प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक ज्ञान तंत्र उपेक्षित हो गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी शिक्षा व्यवस्था लंबे समय तक औपनिवेशिक ढाँचे

[1] प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, डी. बी. एस. कॉलेज, कानपुर, उ. प्र.
[2] शोध छात्रा एवं असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, डी. बी. एस. कॉलेज, कानपुर, उ. प्र.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सकी। पाश्चात्य विचारधारा के विपरीत, कपूर(2025) ने कहा, "भारतीय विचार प्रणाली में, ज्ञान का कार्य अथवा लक्ष्य दूसरों पर शक्ति का प्रयोग नहीं है, बल्कि स्वयं को अपनी सीमाओं तथा बाधाओं से मुक्त करना है।" इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एक महत्त्वपूर्ण सुधारात्मक पहल के रूप में उभरती है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को भारतीयता से जोड़ते हुए अपनी बाधाओं का समाधान खोजते हुए उसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का एक प्रमुख उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना है "जो भारतीय परंपरा में निहित में और वैश्विक दृष्टिकोण से युक्त" हो। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यचर्या, भाषा नीति, कला, संस्कृति, योग, आयुर्वेद, गणित और दर्शन के माध्यम से पुनर्जीवित करने पर विशेष बल दिया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा :अवधारणा और स्वरूप- भारतीय ज्ञान परंपरा एक बहुआयामी और समग्र अवधारणा है, जिसके प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं –

1 .दार्शनिक आधार - भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार वेद, उपनिषद, विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदायों के ग्रन्थ और भगवद् गीता जैसे ग्रन्थ हैं, जो ज्ञान को आत्म-विकास और आत्मानुभूति से जोड़ते हैं। भारतीय दर्शन एक समृद्ध और वैविध्यपूर्ण बौद्धिक परंपरा है, जिसमें आस्तिक और नास्तिक दोनों प्रकार के दर्शन शामिल हैं। छह प्रमुख आस्तिक दर्शन - न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत हैं, जो वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं। इसके विपरीत, बौद्ध, जैन और चार्वाक जैसे नास्तिक दर्शन वेदों की सत्ता को नकारते हुए अपनी स्वतंत्र और मौलिक दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

2. समग्र दृष्टिकोण - भारतीय परंपरा में ज्ञान को खंडित रूप में नहीं बल्कि समग्र रूप में देखा जाता है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा के संतुलित विकास पर बल दिया जाता है। भारतीय दृष्टिकोण में शिक्षा केवल आजीविका तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे पुरुषार्थों को प्राप्त करने के योग्य बनाती थी। शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान और सामाजिक कल्याण के बीच संतुलन स्थापित करना था। वैदिक दर्शन में भौतिक और आध्यात्मिक प्रयासों के बीच संतुलन पर विशेष ध्यान दिया गया। वैदिक जीवन में यह संतुलित दृष्टिकोण व्यक्तियों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करने वाले समग्र जीवन की ओर प्रेरित करता था।

3. अनुभवात्मक अधिगम - गुरुकुल प्रणाली में करके सीखना, जीवनोपयोगी शिक्षा और व्यवहारिक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। पाठ्यक्रम केवल सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि व्यवहारिक ज्ञान पर भी जोर दिया जाता था। कृषि, शिल्प, धनुर्विद्या, औषधि विज्ञान, योग, संगीत और नाटक जैसी विधाओं का भी अध्ययन कराया जाता था।

4. नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा – सत्य, अहिंसा, सह-अस्तित्व, कर्तव्य-बोध और धर्म जैसे मूल्यों का भारतीय शिक्षा में केन्द्रीय स्थान रहा है। भारत में शिक्षा की अवधारणा ज्ञान प्राप्त करने से आगे निकल कर सत्य, अहिंसा, धर्म और निःस्वार्थ सेवा को बढ़ावा देने पर केन्द्रित रही है, जो देश के आध्यात्मिक और सामाजिक संघटन का अभिन्न अंग है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने उपनिषदों व गीता में वर्णित जीवन मूल्यों को व्यापक दृष्टिकोण के साथ संरेखित करते हुए आंतरिक ज्ञान, चरित्र और समाज के प्रति कर्तव्य की भावना को सीखने पर जोर दिया। मूल्य आधारित शिक्षा, प्राचीन शिक्षा को एकीकृत करके न केवल शैक्षणिक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि ऐसे नागरिकों का निर्माण करती है जो विविधता का सम्मान करते हुए न्याय को बनाये रखते हैं और समाज में सकारात्मक योगदान देते हैं।

5. बहुभाषिकता - संस्कृत सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं में ज्ञान-सृजन और प्रसार भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्वपूर्ण विशेषता रही है। प्राचीन भारतीय भाषा विज्ञान का मुख्य केंद्र संस्कृत थी, जो प्राचीन भारत की धार्मिक और शैक्षिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी। यह एक संहिताबद्ध माध्यम था, जिसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों, शैक्षिक संवादों और साहित्यिक रचनाओं के लिए किया जाता था। भारत की लगभग सभी भाषाएँ इसी से उत्पन्न हुई हैं, इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा में बहुभाषिकता एक स्वाभाविक विशेषता रही है, जो ज्ञान के प्रसार, सांस्कृतिक एकता और समावेशी शिक्षा का आधार रही है। यह केवल भाषाओं का

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

ज्ञान नहीं है, बल्कि वैचारिक उदारता और अनुभव का विस्तार है, जहाँ संस्कृत के साथ प्राकृत, पाली तमिल जैसी शास्त्रीय भाषाएँ अपने भीतर विलुप्त ज्ञान भंडार समेटे हुए हैं और एक-दूसरे के साथ समन्वय रखते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा को पोषित करती रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का भारतीय भाषाओं में शिक्षा को प्रोत्साहित करने का संकल्प, भारतीय ज्ञान परंपरा से भारतीय शिक्षा को जोड़े रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 - राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारत सरकार द्वारा 21 वीं सदी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गयी एक व्यापक शिक्षा नीति है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 वैश्विक शिक्षा एजेंडा ,विशेष रूप से सतत विकास लक्ष्य 4 (एसडीजी -4) के अनुरूप बनाई गयी है, जिसका उद्देश्य 2030 तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य समकालीन चुनौतियों का समाधान करने और समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए भारत की शिक्षा प्रणाली का व्यापक पुनर्गठन और पुनर्रचना करना है।

इसके प्रमुख लक्ष्य निम्न हैं –

- समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर बल
- मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा में शिक्षण
- कौशल एवं व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण
- अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन
- भारतीय ज्ञान एवं मूल्यों का समावेशन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन-

पाठ्यचर्या में भारतीयता का समावेश – इस नीति में भारतीय कला, संस्कृति, परंपरा, दर्शन, योग, आयुर्वेद और प्राचीन वैज्ञानिक उपलब्धियों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की अनुशंसा की गई है।

- **दर्शन** - भारतीय दर्शन ज्ञान, चेतना, नैतिकता और मुक्ति के ऐसे ढाँचे प्रस्तुत करते हैं जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। चाहे वह बौद्ध और योग दर्शन से उत्पन्न ध्यान की विधियाँ हों, जैन और मीमांसा से मिली नैतिक जीवन शैली, या न्याय से प्राप्त तर्क और विवेक। भारतीय दर्शन की विविध धाराएँ आज भी व्यक्तिगत विकास, धर्मों के बीच संवाद और वैश्विक बौद्धिक विमर्श में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।
- **भाषा एवं साहित्य** - भाषा और साहित्य के क्षेत्र में, पाणिनि, भर्तृहरि, दिग्नाग जैसे व्याकरणज्ञों ने वाक्य विन्यास और औपचारिक व्युत्पत्ति शास्त्र, संज्ञानात्मक भाषाशास्त्र और संदर्भात्मक अर्थ के बीच के संबंधों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसने आधुनिक भाषाशास्त्र, दर्शन और संज्ञानात्मक विज्ञान पर गहरा प्रभाव डाला है। तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा में भारतीय धरोहर विशेष रूप से वैध तर्क, निराकरण और अर्थ निर्माण के क्षेत्रों में, आज भी भाषा दर्शन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषाशास्त्रात्मक मानवशास्त्र में समकालीन चर्चाओं का एक अभिन्न हिस्सा बनी हुई है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

- **पर्यावरण शिक्षा** - पर्यावरण शिक्षा के संदर्भ में, प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण और समग्र कल्याण की दृष्टि इसकी धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक परंपराओं में गहराई से निहित थी। प्रकृति के प्रति आदर भाव, जो वेदों, उपनिषदों और पुराणों में परिलक्षित होता है, पारिस्थितिक संतुलन और स्थिरता की गहरी समझ को दर्शाता है।
- **आयुर्वेद एवं योग** - आयुर्वेद का समग्र स्वास्थ्य दृष्टिकोण मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य पर जोर देता है, जो प्राकृतिक उपचारों के माध्यम से कल्याण को बढ़ावा देता है। प्राचीन भारत में, विशेष रूप से हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म में, पर्यावरण के संरक्षण को अत्यधिक महत्व दिया गया था। इसी तरह, योग एक व्यावहारिक पद्धति प्रस्तुत करता है, जिसमें नैतिक अनुशासन, शरीर पर नियंत्रण और ध्यान की गहन साधना शामिल है। आज, योग मानसिक स्वास्थ्य, ध्यान और समग्र जीवनशैली का वैश्विक प्रतीक बन गया है।
- **गणित** - दशमलव प्रणाली, स्थानीय मान की अवधारणा और गणितीय तत्व के रूप में शून्य का आविष्कार भारत की महत्वपूर्ण देन है, जिसने अंकगणित और बीजगणित में जटिल गणनाओं को संभव बनाया। यह व्यापार, अभियांत्रिकी और वैज्ञानिक गणनाओं में इन प्रणालियों की भूमिका को दर्शाता है, जिससे प्राचीन भारतीय सभ्यता द्वारा प्राप्त सटीकता और मानकीकरण उजागर होता है।
- **अर्थशास्त्र** - प्राचीन भारतीय मनीषियों ने अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, उपनिषद, शुक्रनीति और अन्य ग्रंथों के माध्यम से ऐसी आर्थिक दृष्टि प्रस्तुत की जिसमें अर्थ का स्वरूप धर्म, लोक संग्रह और पर्यावरणीय संतुलन से अविच्छिन्न था। भारत की अर्थव्यवस्था अनुशासन, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित थी। आज जब विश्व आर्थिक विषमता, पर्यावरणीय संकट और नैतिक पतन जैसी जटिल समस्याओं से जूझ रहा है, तब ये प्राचीन सिद्धांत हमें स्मरण कराते हैं कि समृद्धि तभी स्थायी हो सकती है जब वह न्याय, संयम और साझा मानवता की भावना द्वारा निर्देशित हो।
- **चिकित्सा** - त्रिदोष सिद्धांत, प्रकृति आधारित उपचार प्रणाली, अग्नि की भूमिका, सप्त धातुओं का कार्य, दैनिक और ऋतुचर्या तथा स्वास्थ्य के दर्शनात्मक नींव से यह स्पष्ट होता है कि आयुर्वेद और योग केवल रोगों के उपचार नहीं बल्कि संतुलित उद्देश्यों को पूर्ण जीवन जीने की एक महत्वपूर्ण जीवन पद्धति प्रदान करते हैं। शरीर, मन और आत्मा की एकता पर आधारित यह दृष्टिकोण आधुनिक चिकित्सा की खंडित प्रवृत्तियों के विपरीत प्राकृतिक लय, स्व-अनुशासन और सजग जीवन को प्रोत्साहित करता है।
- **विज्ञान और खगोलशास्त्र** - ब्रह्मांड की उत्पत्ति का दार्शनिक विवेचन, ग्रहों की गति की गणना, पंचमहाभूतों की सिद्धियाँ, पारंपरिक रस शालाओं में धातुओं की शुद्धि, गति के सिद्धांतों पर न्याय और वैशेषिक दर्शन में किया गया विश्लेषण इस बात का परिचायक है कि भारत में वैज्ञानिक अवधारणाओं को शास्त्रीय ढाँचे में समाहित कर गहराई से समझा गया। यह ज्ञान केवल सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि चिकित्सा, खगोल, धातु कर्म, स्थापत्य, इत्र निर्माण जैसी व्यावहारिक प्रणालियों में सफलतापूर्वक लागू भी किया गया।

➢ **मातृभाषा में शिक्षा** - कक्षा पाँच और जहाँ संभव हो उससे आगे तक मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा देने का प्रावधान भारतीय भाषाओं की विरासत को सुदृढ़ करता है। इसका उद्देश्य बच्चों के संज्ञानात्मक विकास ,सीखने में रुचि ,सांस्कृतिक जुड़ाव और अवधारणात्मक समझ को बेहतर बनाना है , साथ ही यह बहुभाषावाद को बढ़ावा देता है। मातृभाषा में शिक्षा से जटिल अवधारणाओं को समझने में आसानी होती है साथ ही यह देश की हर भाषा को सम्मान देकर सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है। यह नीति औपनिवेशिक मानसिकता को छोड़कर, स्थानीय ज्ञान और भाषा को बढ़ावा देने की एक ऐतिहासिक पहल है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

- **बहु विषयक एवं समग्र शिक्षा** – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्राचीन भारतीय शिक्षा परंपरा की भाँति बहु विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है। प्राचीन भारत में गुरुकुलों में छात्रों को वेद, उपनिषद, विज्ञान, गणित, दर्शन, नक्षत्र विद्या, औषधि-विज्ञान, कला और शिल्पकला की शिक्षा प्रदान की जाती थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत समग्र शिक्षा का तात्पर्य केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहकर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के अंतर्गत बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना है।
- **योग, कला और खेल का एकीकरण** - योग एक व्यावहारिक पद्धति प्रदान करता है जिसमें नैतिक अनुशासन, शरीर पर नियंत्रण और ध्यान की गहन साधना शामिल है। वर्तमान में योग मानसिक स्वास्थ्य, ध्यान और समग्र जीवनशैली का वैश्विक प्रतीक बन गया है। विद्यालय शिक्षा में योग, संगीत, नृत्य और कला को शामिल करना भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्स्थापना का प्रयास है।
- **भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकोष्ठ** - उच्च शिक्षा संस्थानों में IKS केंद्र स्थापित करने की सिफारिश की गई है, जिससे पारंपरिक ज्ञान पर शोध को बढ़ावा मिले। यह प्रकोष्ठ पारंपरिक ज्ञान (दर्शन ,विज्ञानं ,चिकित्सा ,गणित) को आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने, इसे संरक्षित करने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत इसे बढ़ावा देने का कार्य करता है। इसका उद्देश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत का अध्ययन ,पुनरुद्धार और आधुनिक ज्ञान से समन्वय स्थापित करना है।
- **मूल्य आधारित शिक्षा** – नैतिकता, संवैधानिक मूल्यों और कर्तव्य बोध पर बल इस नीति की महत्वपूर्ण विशेषता है। शैक्षिक मूल्यों को छात्रों तक पहुँचाने के लिए माता-पिता, परिवार, शिक्षक समाज और अनुशासन सम्बन्धी शिक्षा की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह भूमिका प्राचीन काल में वैदिक शिक्षा के गुरुकुल और बौद्ध शिक्षा केन्द्रों जैसे परिषद , संघों द्वारा शैक्षिक मूल्यों के रूप में छात्रों को सिखाये जाते थे। यहाँ पर ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन तथा नागरिक शास्त्र भी अध्ययन कराये जाते थे जिनका आधार मानवीय एवं शैक्षिक मूल्य होते थे। मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करके देश के छात्रों में भारतीय संस्कृति के साथ-साथ उसे आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के साथ जोड़ा जाए ताकि छात्रों में सहयोग ,साहस, प्रेम, विश्व- बंधुत्व, आत्म- सम्मान, नियंत्रण क्षमता, सुसंस्कृति का विकास हो सके।

संभावित लाभ एवं चुनौतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संभावित लाभों में शिक्षा के माध्यम से आत्मगौरव, सांस्कृतिक पहचान, नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय पहचान को सशक्त बनाना प्रमुख है। यह नीति विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास करती है, जिसमें न केवल शैक्षणिक ज्ञान बल्कि स्थानीय ज्ञान और कौशल का संरक्षण भी शामिल है। इस प्रकार, भारतीय बौद्धिक परंपरा को वैश्विक मंच पर पहचान मिलने के साथ-साथ नवाचार और अनुसंधान को नई दिशा भी मिलती है, जो देश की सांस्कृतिक और शैक्षणिक समृद्धि को बढ़ावा देती है।

हालाँकि, इस नीति के कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ भी हैं। सबसे महत्वपूर्ण है शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण, जो भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षण के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, प्रमाणिक, मानकीकृत और गुणवत्तापूर्ण पाठ्य सामग्री का अभाव इस क्षेत्र में एक बड़ी बाधा है, क्योंकि पाठ्य सामग्री विकास अभी प्रारंभिक चरण में है। राज्यों और संस्थानों में नीति के असमान कार्यान्वयन की संभावना भी क्रियान्वयन संबंधी समस्याओं को जन्म देती है। साथ ही, भारतीय परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच संतुलन बनाए रखना तथा भारतीय ज्ञान परंपरा पर समकालीन अनुसंधान की सीमितता भी इस पहल की सफलता के लिए चुनौतीपूर्ण कारक हैं। यदि हम प्राचीन ज्ञान को वर्तमान की समस्याओं के समाधान में एक सेतु की तरह प्रयोग कर सके, तो हम न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखेंगे, बल्कि एक आत्मनिर्भर, टिकाऊ और सशक्त भारत का निर्माण भी कर सकेंगे। इस प्रकार, प्राचीन भारत का ज्ञान - विज्ञान

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

केवल अतीत की उपलब्धि नहीं हैं, वह भविष्य की दिशा भी है।

निष्कर्ष-

भारतीय ज्ञान परंपरा, जो सदियों से विकसित होती आयी है, न केवल हमारे सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह विज्ञान, कला, और नैतिकता के क्षेत्र में भी गहन योगदान प्रदान करती है। इसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ जोड़ने का प्रयास न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करेगा, बल्कि विद्यार्थियों को एक समग्र दृष्टिकोण भी प्रदान करेगा, जो केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित न रहकर मूल्य आधारित और नवोन्मेषी सोच को प्रोत्साहित करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जो भारतीय ज्ञान की समृद्ध परंपरा को आधुनिक शैक्षिक ढाँचे में प्रभावी रूप से शामिल करने का मार्ग प्रशस्त करती है। यदि इस नीति के प्रावधानों को योजनाबद्ध और प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करेगा, बल्कि विद्यार्थियों में सांस्कृतिक आत्मसातीकरण और राष्ट्रीय पहचान की भावना को भी मजबूत करेगा। इससे शिक्षा प्रणाली अधिक समग्र, मूल्यपरक और नवोन्मेषी बनकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी अपनी विशिष्टता स्थापित कर सकेगी। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा का समन्वय एक ऐसा माध्यम बनेगा जो भविष्य की पीढ़ी को न केवल तकनीकी दक्षता बल्कि सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों के प्रति सजग भी बनाएगा।

सन्दर्भ

- शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार.(2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020.* नई दिल्ली: भारत सरकार।
- भारत सरकार.(2019). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रारूप*. नई दिल्ली : मानव विकास संसाधन मंत्रालय।
- अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद.(2021). *विद्यालयी शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण*. नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग.(2021). *उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन हेतु दिशा -निर्देश*. नई दिल्ली : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
- अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद.(2022). *भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) : रूपरेखा एवं पहल.* नई दिल्ली : ए.आई.सी.टी.ई.।
- शर्मा, आर., एवं गुप्ता, ए.(2021). समकालीन शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता: राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में एक अध्ययन. *अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका*, *9*(2).
- शर्मा, राज. किशोर., एवं कुमार, दीपक.(2025). *गुरुकुल और वैदिक परंपरा* (खंड 2-19). नई दिल्ली : किताब वाले।
- मिश्रा, पी.(2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं शिक्षक शिक्षा. *शिक्षक शिक्षा एवं अनुसंधान पत्रिका*, *16*(2).
- यादव, सुरेन्द्र.(2025). *भारतीय ज्ञान परंपरा में मूल्य आधारित शिक्षा की महत्ता*. नई दिल्ली : किताब वाले।
- महाजन, गौरव.(2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली. *इंटरनेशनल जर्नल रिसर्च पब्लिकेशन एनालिसिस*, *2*(1).
- ठाकुर, अमोद., कुमार, आशीष., एवं साची, सव्य.(2024). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा. *एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन : थ्योरी एंड प्रैक्टिस*, *30*(1).

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, April 2026
Impact Factor: 8.2

- काकडे, हरेश.(2025). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली की खोज. *इनोवारे जर्नल ऑफ एजुकेशन, 13*(3).
- राय, बर्नाली.(2025). भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020. *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च, 12* (1).
- स्वरुप, एच. (2025). भारत *की ज्ञान परम्पराएँ : एक व्यापक अध्ययन*. मुंबई : भारतीय विद्या भवन।
- Kapoor, K. (2025, February 20-21). Indian Knowledge System and NEP 2020. In 12th International Conference on Indian Knowledge System and Foreign Policy, Amity School of Languages Lucknow Campus Organizes. Retrieved February 28, 2025, from https://www.amity.edu/lucknow/isfp/#:~:text=Kapil%20Kapoor%20states%2C%20%E2%80%9CIn%20the,that%20goes%20beyond%20academic%20brilliance